Method of giving samadhi to the Dead Cow: -

According to the size of the dead cow, dig a pit of 5 feet long, 4 feet wide and 5 feet deep in such a place where there is no danger of water filling. In the excavated pit, first one foot of dung of indigenous cow is put in the bottom and 25 kg of salt is poured. Then the dead cow is laid on top. Then 45 kilograms of salt is poured over the body of the cow. The space between the body of the cow and the walls of the pit is filled with the dung of the indigenous cow.

After that, it is covered from above with cow dung and then soil. It is necessary to keep in mind that the cow dung or soil of the indigenous cow must remain up to 2 feet above the body of the dead cow. It is also necessary that if the moisture content in the dung or soil is less, then by sprinkling water, the cow dung or soil should be moistened. “After filling the pit, you must put barbed wire and wild barbed bushes on top so that dogs / carnivorous wild animals cannot dig up and eat them”.

At the time of making pits, those already lying bones come out, they should be given samadhi along with the dead cow's body by increasing the amount of salt to 100 kg instead of 70. The work of giving graves to the dead cows should be done in rows. After 15 months, the samadhi manure of a cow can be removed and used as manure in cultivable land up to 3 acres, which will be beneficial in the form of manure for 5 to 10 years, which will contain all the nutrients and nutrients used for farming. Will supply micro-organisms. Mahashakti organic manure (only 30 grams per acre) can be made from the horns found while extracting gravel compost of dead indigenous cows. Similarly, proper management of the land already available near the Gaushala can be done by making samadhi manure from the dead cows of the Gaushala.

मृत गौवंश को समाधि देने की विधि :-

मृत गौवंश के आकार के अनुसार 5 फीट लम्बा, 4 फीट चोडा और 5 फीट गहरे आकार का गड्ढ़ा ऐसे स्थान पर खोदें जहाँ पानी भरने का खतरा न हो। खोदे गये गड्ढ़े मे सर्वप्रथम 1 फीट देसी गौवंश के गोबर की तह लगा दी जाती है ओर 25 कि0 ग्राम नमक डाला जाता है। फिर ऊपर मृत गौवंश को लिटा दिया जाता है। फिर गौवंश के शरीर के ऊपर 45 कि0 ग्राम नमक डाल दिया जाता है। गौवंश के शरीर एवँ गड्ढ़े की दीवारों के बीच के रिक्त स्थान को देसी गौवंश के गोबर से भर दिया जाता है। तदोपरान्त ऊपर से गौवंश के गोबर और फिर मिट्टी से ढक दिया जाता है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मृत गौवंश शरीर के 2 फिट ऊपर तक देसी गौवंश का गोबर या मिट्टी अवश्य रहे। यह भी आवश्यक है कि यदि गोबर या मिट्टी में नमी की मात्रा कम हो तो पानी का छिड़काव करके गोबर या मिट्टी को नम कर देना चाहिए। “गडढे को भरने के बाद ऊपर से कांटेदार तार तथा जंगली कांटेदार झाड़ियाँ अवश्य लगा दे ताकि कुत्ते/मांसाहारी जंगली जानवर ऊपर को खोदकर खाने न पायें” |

गड्ढे करते समय जो पहले से पड़ी अस्थियॉ बाहर आ जाती हैं उनको मृत गौवंष के साथ ही नमक की मात्रा 70 की बजाये 100 कि0 ग्राम तक कर के मृत गौवंष के षरीर के साथ ही समाधि दे दी जाये। मृत गौवंष को पंक्तियों में समाधि दिये जाने का कार्य किया जाना चाहिये। 15 महीने पष्चात एक गौवंष की समाधि खाद को निकालकर 3 एकड तक खेती योग्य भूमि में खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है जो 5 से 10 वर्शों तक खाद के रूप में लाभदायक रहेगी जो खेती के लिए उपयोग में आने वाले सभी पोशक तत्वों एवं सूक्ष्म जीवाणुओं की पूर्ती करेगी। मृत देसी गौवंष की समाधि खाद निकालते समय मिलने वाले सींगों से महाषक्ति जैव खाद (केवल 30 ग्राम प्रति एकड) बनाई जा सकती है। इसी तरह गौषाला के मृत गौवंष से समाधि खाद बनाकर गौषाला के पास पहले से ही उपलब्ध भूमि का उचित प्रबंधन किया जा सकता है।